

शराबी की कसम

कहते हैं शराबी की कसम की मियाद अधिक से अधिक 24 घंटे की होती है। कसम खाते वक्त उसे सब ध्यान रहता है – अपना गिरता हुआ स्वास्थ्य, लीवर की बिगड़ती स्थिति, परिवार की आर्थिक स्थिति, लाचार पत्नि, मासूम बच्चे सब उसको जैसे कसम खाने के लिये मजबूर कर रहे होते हैं। “बस कल से तौबा” “बहुत हो गई”, “हर बात की हद होती है” जैसे जुमलों के साथ सुबह-सुबह खाई जाती हैं कसमें।

शाम होते ही वादा वफा होने की जगह हो जाता है हवा। उसकी चारित्रिक अशक्तता उस पर हावी हो जाती है। जाने कहाँ से पैसा आ जाता है और उस पैसे से आ जाती है एक “बोतल”। अपनी कसम तोड़ने के लिये आध्यात्मिक ज्ञान खुलकर सामने आ जाता है। सूफियाना अंदाज़ में वो कह बैठता है –

“ग़ालिब शराब पीने दे मस्जिद में बैठकर,
या वो जगह बता दे, जहाँ पर खुदा न हो।।”

वो मदिरा को भोलेनाथ का प्रसाद बताने लगते हैं। बहुत कम लोग इसका तार्किक विरोध कर पाते हैं। शिव जी ने विष पिया नहीं बल्कि उसे कंठ में रोक रखा है ताकि पृथ्वी पर उसकी एक बूँद भी न गिर पाये ताकि हम ज़हर पीकर अपनी बर्बादी न करें तथा उन कार्यों में लगे जिसके लिये हम धरती पर आये हैं।

सोचता हूँ दुनियाँ में हर लत/आदत मनुष्य को पूरी तरह से अशक्त कर देती है। चाहे वह मदिरा हो, तंबाकू, धुम्रपान हो या हो मधुमेही की बदपरहेजी की लत। यहाँ संदर्भ मधुमेह का है। हम पाते हैं कि मधुमेहियों का एक बड़ा वर्ग (सारे नहीं) तीन-चार लतों की गिरफ्त में रहता है :-

1. ब्लड शुगर जाँच टालते रहने की लत।
2. रिपोर्ट आते ही उस पर अविश्वास जताने की लत।
3. ऊँट-पटाँग लोगों के ऊँट-पटाँग इलाजों को अपनाने की लत।
4. जान बूझकर वर्जित भोजन करने की लत।

मजे की बात तो यह है कि इन सब लतों के दुष्परिणामों की शराबी की ही तरह उसे पूरी जानकारी होती है। शराबी की ही तरह कल से रोज़ “मार्निंग वॉक” तथा “पूरा परहेज” की कसम खाकर सोता है तथा अगले दिन सुबह शराबी की तरह ही वह कसम भी.....।

आओ कसम खायें ऐसी, कसम जो कभी टूटे नहीं। ऐसी कसम जो हमें गुर्दा, आँख और पाँव को सलामत रखने में मदद कर सके। ऐसी कसम जो हमें हृदय रोग और पैरालिसिस (पक्षघात) के झटकों से महफूज़ रख सके। कसम खायें कि हम परहेजी भोजन करेंगे, व्यायाम करेंगे, नित्य दवा लेंगे, मधुमेह वाणी पढ़कर उचित जानकारी लेते रहेंगे।

● संपादक